18 / 09 / 75 की अव्यक्त वाणी

पर आधारित योग अनुभूति

स्वदर्शन चक्रधारी

बनने का अनुभव

➢➢ मैं आत्मा स्वदर्शन चक्रधारी हूँ

➳_➳ मै एक तेजोमय बिन्दु हूं, स्व स्वरूप में स्थित हूं

→ यह देह संपूर्ण स्थिर हैं

→ मै आत्मा सम्पूर्ण मौन में हूँ

→ मैं एक चमकता हुआ सितारा हूं

- मैं आत्मा इस देह से अलग देह से न्यारी हूँ
  - मै एक ज्योति का कण हूं
  - धीरे धीरे मैं आत्मा इस देह से निकल जा रही हूँ ऊपर आकाश में

→ पांच तत्वो का बना यह शरीर छोड़ मैं आत्मा अपने सूक्ष्म शरीर से उड़ रही हूँ ऊपर

- मै फरिश्ता उड़ रहा हूँ
- ऊपर आकाश से परे
- पांच तत्वों की दुनिया से परे
  - और पहुंच गया सुक्ष्म वतन में श्वेत प्रकाश की यह दुनिया

→ स्वयं अव्यक्त बापदादा सामने खड़े हैं

- मैं आत्मा बाबा से दृष्टि ले रही हूँ
- बाबा के नयनो से पवित्रता की किरणे निकल मुझमें समा रही हैं
  - बाबा के मस्तक से सर्व शक्तियों की किरणे निकल मुझमें समा रही हैं

→ बाबा ने अपना वरदानी हाथ मेरे सिर पर रख दिया

- ज्ञान ,गुण ,और शक्तियां इस हाथ से मुझ आत्मा में समा रही हैं
- स्वयं परमात्म हस्त मेरे सिर पर हैं
  - मै परमात्म छत्रछाया में हूं
  - बाबा मुझे तिलक दे रहे हैं

→ विजयी भव

→ सफलता मूर्त भव

→ विघ्न विनाशक भव

- के अथाह वरदानो से बाबा मेरी बुध्धि रुपी झोली भर रहे है

➳_➳ अनादी स्वरुप

→ स्थूल और सूक्ष्म दोनों शरीरों से परे अब मै आत्मा उड़ता हुआ जा रहा हूँ परमधाम की और

■ मैं आत्मा ब्रह्म लोक में हूँ

■ चहू ओर लाल प्रकाश हैं

■ मै अपने घर आ गयी हूं

 मै आत्मा परम धाम में इस निराकारी दुनिया में

 मै आत्मा निराकार, आवाज़ से परे...निर्मान, सर्व बंधनो से मुक्त मुक्तिधाम में...मेरे सन्मुख महाज्योतिहैं

→ मै सम्पूर्ण शांत स्वरूप एक अविनाशी आत्मा हूं. शांति मेरा स्वधर्म हैं.. मैं आत्मा ज्ञानसूर्य के सन्मुख.. मास्टर ज्ञानसूर्य

■ मैं आत्मा सर्व शक्तिमान की संतान मास्टर सर्वशक्तिमान हूं

 ज्ञानसूर्य की सम्पूर्ण किरणे मुझमें समा रही हैं..

→ शांति का वह सागर.. शांति की वह संपूर्ण किरणें मै आत्मा अपने मे ग्रहण कर रही हूं..

■ पवित्रता के सागर की संतान मै परम पवित्र आत्मा शिवबाबा से कंबाइंड हूं

 मैं आत्मा सत चित आनंद स्वरुप हूँ

➳_➳ देवी-देवता स्वरुप

→ अब मै आत्मा धीरे धीरे नीचे उतरती हूं..

■ नीचे आते ही एक देव रूप मैंने धारण किया हैं

 मै नई दुनिया में हूं

 स्वर्ग में हूं

 सृष्टि का आदि काल हैं

→ सम्पूर्ण सतोप्रधान प्रकृति

■ मै आत्मा सम्पूर्ण पावन

■ मेरी यह देह भी सम्पूर्ण पावन, सम्पूर्ण निर्विकारी, सम्पूर्ण पवित्र

■ 16 कला से युक्त मै देवकुल में हूं

 2,500 वर्ष पवित्रता ही मेरा शृंगार हैं

➳_➳ पूज्य स्वरुप

→ उसके बाद मै आत्मा द्वापर युग में मंदिरों में मेरी पूजा हो रही हैं

■ मै ही दुर्गा,सरस्वती,महालक्ष्मी, जगदम्बा

 मेरे मंदिरों में असंख्य भक्तों की भीड़ लगी हैं

→ और मै अपने सभी भक्तों को वरदान दे रही हूँ

■ सभी आत्माओं को संतुष्ट करनेवाली मै माँ संतोषी हूं

 विकारों पर विकराल रूप मै महा काली हूं

→ आत्माओं को धन से भरपूर करनेवाली मै महालक्ष्मी हूं

■ विघ्नों का विनाश करनेवाला मै विघ्नविनाशक गणेश हूं, संकट मोचन हनुमान

 और असंख्य भक्तों की भीड़ सभी को मै आत्मा तृप्त कर रही हूं

➳_➳ ब्राह्मण स्वरुप

→ 5,000 हज़ार साल पहले का जरर्नी अब पुरा हो रहा है

■ और मै आत्मा अब संगम युग पर स्वयं भगवान अब मुझे मिल गया

 मै ईश्वरीय छत्रछाया में हूं

→ स्वयं भगवान मेरे सन्मुख हैं

■ एक उससे ही प्यार

■ एक उसका ही संग

■ एक उसीसे सर्व संबंध

■ एक उसीकी याद

 केवल एक के प्रति समर्पण भाव

 एक ही बल एक भरोसा

 एक वही सबकुछ

 मै आत्मा ईश्वरीय प्रेम में खो गयी

➳_➳ फ़रिश्ता स्वरुप

→ फिर से स्थूल देह को छोड़ मै फरिश्ता

■ आकाश में सूक्ष्म वतन में पहुंच गया

 बाबा की यह वरदानी द्रष्टि मुझ पर

→ उस दृष्टि को लेकर

■ मै फरिश्ता फिरसे चल रहा हूँ नीचे

 मै परम पवित्र फरिश्ता मेरे अंग अंग से पवित्रता की किरणे निकल रही हैं

→ सम्पूर्ण आकाश मे फैल रही हैं

■ सूर्य, चंद्रमा, नक्षत्र, सभी ग्रह आकाश में घूमते यह सभी बादल

 सभी को मै पवित्रता की किरणे प्रदान करता हूँ

→ मै फरिश्ता अब नीचे उतर रहा हूँ

■ वायुमंडल में मुझसे पवित्रता की किरणे फैल रही हैं

 अब मैं फरिश्ता नीचेइस ग्लोब के ऊपर खड़ा हूं

→पहले से ही पवित्रता की किरणे निकल सम्पूर्ण ग्लोब पर छा रही हैं.

■ साथ ही साथ मेरे आंखो के सामने

 संसार की सभी दुखी आत्माएं ईमर्ज हो रही है

 इन सभी दुखी आत्माओं को मै फरिश्ता सुखकी किरणे प्रदान कर रहा हूं

→ अशांत आत्माओं को शांति की किरणेप्रदान कर रहा हूं

■ संसार की सभी यह पतित आत्माएं मेरे सामने हैं

 और इन सबको पवित्रता की किरणे प्रदान कर रहा हूं

→ देख रहा हूँ, यह कमजोर आत्माको

■ इन सभी में मै आत्माएं शक्तियां भर रहा हूँ

 संसार की यह असंतुष्ट आत्माओं को संतुष्टता के परम धन से भरपूर कर रहा हूं

→ मै फरिश्ता अपने इस विश्व कल्याण के कर्तव्य को कर

■ अब धीरे धीरे वापिस नीचे उतरता हूं

 धीरे धीरे अपने स्थूल देह में प्रवेश करता हूं

→ भ्रूकुटी तख्त पर बैठी मै आत्मा विश्व कल्याणकारी हूं

■ विश्व के लिये आधार मूर्त, उद्धारमूर्त हूं

 विश्व के सभी विघ्नों को विनाश करने वाली मै आत्मा विघ्न विनाशक हूं